

पितृयज्ञ पुं. (तत्.) 1. पितरों का तर्पण, श्राद्ध आदि 2. माता-पिता की सेवा।

पितृलोक पुं. (तत्.) पितरों का लोक।

पितृवंश पुं. (तत्.) पिता का वंश या कुल।

पितृवन पुं. (तत्.) श्मशान, मरघट, पितृकानन।

पितृवंशिक वि. (तत्.) वह समाज जिसमें पिता, पुत्र इत्यादि के क्रम से वंशानुक्रम निश्चित होता है।

पितृविसर्जन पुं. (तत्.) अश्विन मास की कृष्ण अमावस्या के दिन अंतिम श्राद्ध के बाद पितरों की विदाई का कृत्य।

पितृश्राद्ध पुं. (तत्.) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध-कर्म।

पितृस्थानीय पुं. (तत्.) वह जो पिता के स्थान पर या उसके समान हो, अभिभावक।

पितृ हत्या पुं. (तत्.) पिता की हत्या।

पितृहंता वि. (तत्.) अपने पिता की हत्या करने वाला, पितृहा।

पितृहा वि. (तत्.) दे. पितृहंता।

पित्तौजिया पुं. (देश.) एक छायादार ऊँचा पेड़ जिस पर वसंत ऋतु में फूल आते हैं और पीताभ श्वेत होते हैं और संतान दायक माना जाता है।

पित्तकर वि. (तत्.) पित्त बढ़ाने वाला, पित्तवर्धक, पित्तकारक।

पित्तकोष पुं. (तत्.) पित्ताशय।

पित्तक्षोभ पुं. (तत्.) पित्त के बिगड़ने से होने वाला विकार।

पित्तगदी वि. (तत्.) जिसका पित्त बिगड़ा हुआ हो।

पित्तगुल्म पुं. (तत्.) पित्त की अधिकता के कारण पेट फूल जाने का एक रोग।

पित्तघ्न वि. (तत्.) पित्त का नाश अथवा उसके विकारों को दूर करने वाला।

पित्तज वि. (तत्.) पित्त अथवा उसके प्रकोप से उत्पन्न होने वाला जैसे- पित्तज ज्वर।

पित्तज्वर पुं. (तत्.) पित्त बिगड़ने से होने वाला ज्वर।

पित्तदाह पुं. (तत्.) पित्त ज्वर।

पित्तद्रवी वि. (तत्.) पित्त को द्रवित करने वाला।

पित्तधरा स्त्री. (तत्.) पित्त को धारण करने वाली कला अथवा झिल्ली ग्रहणी।

पित्तनाड़ी स्त्री. (तत्.) पित्त के प्रकोप से होने वाला एक प्रकार का नाड़ी व्रण।

पित्तनाशक वि. (तत्.) 1. पित्त का नाश करने वाला 2. पित्त का प्रकोप दूर करने वाला, उग्र अथवा बिगड़े पित्त को शांत करने वाला।

पित्तपथरी स्त्री. (तत्.+तद्.) [सं. पित्त+हि. पथरी] एक प्रकार का रोग जिसमें पित्ताशय अथवा पित्तवाहक नालियों में पित्त की कंकड़ियाँ बन जाती हैं, यद्यपि ये पित्ताशय में ही बनती हैं, पर यकृत और पित्त-प्रणालियों में भी पाई जाती हैं।

पित्त पांडु पुं. (तत्.) पित्त के प्रकोप के कारण होने वाला एक रोग जिसमें रोगी का सारा शरीर पीला पड़ जाता है, पीलिया।

पित्त पापड़ा पुं. (तत्.+देश.) एक प्रकार के छोटे क्षुप जो गेहूँ के खेतों में अपने आप उग आते हैं टि. यह दो प्रकार का होता है, लाल फूलों वाला और नीले फूलों वाला, दाह और प्यास दूर करने के लिए इनका औषधि के रूप में उपयोग होता है।

पित्तप्रकृति वि. (तत्.) जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की प्रधानता हो।

पित्त प्रकोप पुं. (तत्.) पित्त का उग्र अथवा कुपित हो जाना, पित्त का बढ़ जाना।

पित्तल वि. (तत्.) 1. जिसमें पित्त की अधिकता हो 2. जिससे पित्त का प्रकोप या दोष बढ़े,